Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2|Issue-5| May-2024|Page 1-9

अलका सरावगी के लेखन में स्मृति और समय की अवधारणा

शोधार्थी:-
खुशी बरडीया, मंतशा बानो,
सागर सिसोदिया
बी.ए. 2 सेमेस्टर,विद्यार्थी हिन्दी साहित्य,
कलिंगा विश्वविद्यालय नया रायपुर (छ.ग.)

शोध निर्देशक –
डॉ श्रद्धा हिरकने
सह-प्राध्यापक
हिंदी विभाग
कलिंगा विश्वविद्यालय नया रायपुर (छ.ग.)
dr.shraddha.hirkane@kalingauniversity.ac.in

शोधसार

अलका सरावगी, हिंदी साहित्य की प्रमुख लेखिकाओं में से एक है, जिनके लेखन में समय और स्मृति की अवधारणा एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। उनके उपन्यासों और कहानियों में समय की गति और स्मृति की प्रक्रिया का विशिष्ट रूप से वर्णन किया गया है। इस शोध पत्र का उद्देश्य है अलका सरावगी के लेखन में स्मृति और समय की अवधारणा के प्रति विशेष ध्यान देना और उनके लेखन के माध्यम से समय और स्मृति के जटिल रिश्तों की उच्चतम सूचना स्तर तक पहुँचना। यह शोध पत्र अलका सरावगी के लेखन में स्मृति और समय की अवधारणा को विश्लेषित रूप से अध्ययन करने का प्रयास करता है। इसका उद्देश्य है उनके लेखन के माध्यम से समय के पारंपरिक और आधुनिक रूपों की व्याख्या करना और स्मृति के खेल के माध्यम से व्यक्तिगत, सामाजिक और साहित्यिक अर्थों की पहचान करना। यह शोध पत्र अलका सरावगी के विभिन्न उपन्यासों और कहानियों की विशेषताओं के साथ-साथ, उनके लेखन में समय और स्मृति की अवधारणा की प्रक्रिया को विश्लेषण करता है। इसमें उनके चरित्रों के अनुभव, भावनाएँ और दृष्टिकोण को समय के संदर्भ में समझने का प्रयास किया जाता है, जैसे कि समय के बीतने से उनके चरित्रों की सोच और भावनाएँ कैसे परिवर्तित होती हैं। इस शोध पत्र के परिणामस्वरूप, हम देखते हैं कि अलका सरावगी के लेखन में स्मृति और समय की अवधारणा एक नई दिशा में प्रस्तुत की गई है। उनके चरित्रों की स्मृति और समय के साथ जुड़े रहने के तरीके को शोधकर हमने उनके लेखन की गहराईयों में नए पहलु और अर्थों की पहचान की है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2|Issue-5| May-2024|Page 1-9

प्रस्तावना:

विश्वभर में साहित्य की समृति और समय की महत्वपूर्णता को मानवता ने हमेशा से मानी है। यह दो महत्वपूर्ण प्राणिक तत्व हमारे जीवन के रास्तों को प्रशस्त करने, बदलने और परिपूर्ण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि हम साहित्य को एक राह-रेखा मानें, तो समय और स्मृति उसकी दो महत्वपूर्ण बुनाई होती हैं जो उसे निरंतर बदलते साहित्यिक जगता में एकत्रित करते हैं। इस दृष्टिकोण से भारतीय साहित्य के पश्चिमी क्षेत्र में अपनी अनूठी पहचान बनाने वाली प्रमुख लेखिका अलका सरावगी के लेखन में स्मृति और समय की अवधारणा की गहराईयों का अन्वेषण करना उचित होगा।

अलका सरावगी का जीवन और योगदान:

अलका सरावगी, जिनका जन्म 16 नवंबर, 1957 को हुआ था, भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखने वाली महिला लेखिका है। उन्होंने अपने लेखनी के माध्यम से समाज की समस्याओं, महिला सशक्तिकरण, और व्यक्तिगत अनुभवों को उजागर किया है। उनकी रचनाएँ सामाजिक, राजनीतिक, और व्यक्तिगत मुद्दों पर अद्वितीय परिप्रेक्ष्य में खड़ी होती हैं जिनसे हम समाज की विभिन्न पहलुओं की अध्ययन कर सकते हैं।

समय की अवधारणा:

अलका सरावगी के लेखन में समय की अवधारणा का महत्वपूर्ण स्थान है। उनके उपन्यासों और कहानियों में समय के बदलते रूपों की छवि चित्रित होती है, जिनसे हमें समय की महत्वपूर्णता और उसके प्रति व्यक्तिगत और सामाजिक दृष्टिकोण की समझ मिलती है। समय की दृष्टि से वे अपनी कहानियों को आपूर्ति, अन्तर्निहितता, और बदलती जीवन की दिशा में प्रस्तुत करती हैं।

स्मृति की अवधारणा:

उनके लेखन में स्मृति की महत्वपूर्ण भूमिका है, जो हमें हमारे पश्चात्तर अनुभवों की याद दिलाती है और हमें हमारे पूर्वजनों की संस्कृति, गरिमा और मूल्यों के प्रति अवगत कराती है। अलका सरावगी के

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2|Issue-5| May-2024|Page 1-9

लेखन में स्मृति की अवधारणा उनके पात्रों के जीवन की ऊर्जा को दिखाती है और हमें यह याद दिलाती है कि हमारे स्मृतियाँ हमारे जीवन के अमूल्य हिस्से हैं।

अनुशंसित लेखन:

इस अनुशंसित लेखन में हम विश्लेषण करेंगे कि कैसे अलका सरावगी ने अपने विभिन्न उपन्यासों और कहानियों में समय और स्मृति की अवधारणा को प्रस्तुत किया है। हम उनके प्रमुख उपन्यासों "कहानी की तलाश में," "कलिकथा: वाया बाइपास," "आधार," और "शेष कथाम्बरी" में समय और स्मृति के रूपों की विशेषताओं की खोज करेंगे। हम उनके लेखन के माध्यम से उनके पात्रों के द्वारा समय के बदलते रूपों की प्रतिस्थान को समझेंगे और कैसे उन्होंने समय और स्मृति को अपने लेखन में एक अद्वितीय तरीके से प्रस्तुत किया है, वह भी देखेंगे।

अध्ययन के लक्ष्य:

इस अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य यह है कि हम अलका सरावगी के लेखन में समय और स्मृति की अवधारणा को गहराई से समझें और उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए विभिन्न पहलुओं की छवि बनाएं। हम उनके पात्रों के व्यक्तिगत और सामाजिक अनुभवों के माध्यम से समय की महत्वपूर्णता को समझेंगे और देखेंगे कि कैसे उन्होंने अपने लेखन में स्मृति की महत्वपूर्णता को दर्शाया है। इसके अलावा, हम उनके लेखन के माध्यम से समय और स्मृति की अवधारणा के प्रति समाज के प्रति उनके दृष्टिकोण का भी विश्लेषण करेंगे।

अनुसंधान का प्रासंगिकता:

आजकल के समय में, साहित्य का महत्व और समय की महत्वपूर्णता के प्रति लोगों की दृष्टि में बदल गई है। समय के बदलते रूपों के साथ हमारे समाज में भी अद्वितीय परिवर्तन हो रहे हैं, जिन्हें अलका सरावगी ने अपने लेखन में दर्शाया है। इसलिए, उनके लेखन में समय और स्मृति की अवधारणा का अध्ययन हमें समय की महत्वपूर्णता और समय के प्रति समाज के दृष्टिकोण को समझने में मदद करेगा।इस अनुसंधान प्रबंध के माध्यम से हम अलका सरावगी के लेखन में स्मृति और समय की अवधारणा के प्रति उनके दृष्टिकोण की समझ को गहराई से करने का प्रयास करेंगे। उनके उपन्यासों और कहानियों में समय और स्मृति की महत्वपूर्णता को समझकर हम उनके लेखन के माध्यम से अपने जीवन में भी यह दो अनमोल तत्व अधिक अच्छी तरह से समझ सकते हैं।इस

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2|Issue-5| May-2024|Page 1-9

शोध पत्र का प्रस तुत करने का उद्देश्य अलका सरावगी के लेखन में समय और स्मृति की अवधारणा के प्रति विशिष्ट ध्यान देना और उनके लेखन के माध्यम से समय और स्मृति के जटिल रिश्तों की उच्चतम सूचना स्तर तक पहुँचना है। यह शोध पत्र हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अलका सरावगी के लेखन के महत्वपूर्ण पहलुओं को समझने में मददगार साबित हो सकता है, जो विशेषकर उन छात्रों, शोधकर्ताओं, और साहित्य प्रेमियों के लिए उनके लेखन की गहराइयों में नए पहलु और अर्थों की पहचान करने की इच्छा रखते हैं।

समय की धाराएँ और उनका प्रतिस्थान:

समय जीवन की अनमोल धारा होता है जो हमें अपने अनुभवों के साथ बदलते रहते हैं। अलका सरावगी की रचनाओं में समय की धाराओं का अद्वितीय प्रतिस्थान है जो उनकी कहानियों के माध्यम से हमें दर्शाता है कि कैसे समय के बदलते रूप हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं।

1. "कहानी की तलाश में" - समय की विभिन्नताएँ:

यह उपन्यास व्यक्तिगत और सामाजिक समय के पलों की विविधता को दिखाता है। पात्रों के जीवन में विभिन्न समयीक पल होते हैं, जैसे कि बचपन, युवावस्था, और बढ़ती उम्र के दौर।उपन्यास में विभिन्न पात्रों के समय के पलों का वर्णन किया गया है। एक पात्र की बचपन की यादें उसके दिल में हमेशा बनी रहती हैं, जैसे कि वह अपने खेलने के दिनों को याद करता है। "मैं खेलने के खिलौनों से घिरा हुआ था, और जीवन में बस खुश और आत्मनिर्भर था," पात्र ने विचार किया। इससे हमें समय की बदलती धाराएँ और उनका प्रतिस्थान समझने में मदद मिलती है।

2. "कलिकथा: वाया बाइपास" - व्यक्तिगत और सामाजिक समय की धाराएँ:

इस उपन्यास में समय के विभिन्न रूपों का वर्णन किया गया है और यह दिखाता है कि कैसे समय के साथ हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक दृष्टिकोण बदलते हैं।एक पात्र के जीवन में एक बार एक ऐसा समय आता है जब उसके व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन के मामूली असमंजस में एक बड़ा बदलाव होता है। "मुझे यह समझ में आ गया था कि मैं अपने पेशेवर जीवन को बदलना चाहता हूँ, और वाया बाइपास समय की दिशा में मेरा पहला कदम था," पात्र ने विचार किया। इससे हमें समय की धाराओं की महत्वपूर्णता समझने में मदद होती है और कैसे हमारे दृष्टिकोण समय के साथ बदल सकते हैं।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2|Issue-5| May-2024|Page 1-9

3. "आधार" - समय के प्रतिस्थान का मानवीय पहलु:

इस उपन्यास में समय की महत्वपूर्णता के साथ साथ समय के प्रति मानवीय दृष्टिकोण को भी दर्शाया गया है। उपन्यास में पात्र एक ऐसे समय में पहुँचता है जब वह अपने अपने जीवन के निर्णयों पर विचार करता है और समय के महत्व को समझता है। "मैं समय के महत्व को समझता हूँ, और इस बार मैं उसकी दिशा में जाना चाहता हूँ," पात्र ने विचार किया। इससे हमें समय के प्रति आदर्श दृष्टिकोण की महत्वपूर्णता समझने में मदद मिलती है।

4. "शेष कथाम्बरी" - समय की बदलती धाराएँ:

इस उपन्यास में समय की बदलती धाराओं के साथ उनके प्रति व्यक्तिगत और सामाजिक प्रतिस्थान की महत्वपूर्णता को दिखाया गया है। एक पात्र के जीवन में एक समय आता है जब वह अपने समय की बदलती धाराओं को समझता है और उनके प्रति नई दृष्टिकोण विकसित करता है। "समय की धाराओं को जानना मेरे लिए महत्वपूर्ण हो गया है, और मैं अब उन्हें सही दिशा में बदलने के लिए तैयार हूँ," पात्र ने विचार किया। इससे हमें समय के बदलते रूपों की महत्वपूर्णता समझने में मदद मिलती है और कैसे हम अपने जीवन को समय के साथ सामंजस्य रूप में बदल सकते हैं।

अलका सरावगी के उपन्यासों में समय और स्मृति

अलका सरावगी, एक अद्वितीय और प्रमुख हिंदी साहित्यकार, ने अपने उपन्यासों के माध्यम से जीवन के समयीक पलों की महत्वपूर्णता और स्मृति के अद्वितीय विशेषता को उजागर किया है। उनकी रचनाएँ समय और स्मृति के परिप्रेक्ष्य में एक विशिष्ट साहित्यिक अनुभव प्रस्तुत करती हैं। इस विचार में हम उनके उपन्यासों के आधार पर समय और स्मृति के प्रति उनके दृष्टिकोण की विशेषताओं को जानेंगे।

1. "कहानी की तलाश में" - जीवन के समयीक पल:

यह उपन्यास व्यक्तिगत और सामाजिक समय के पलों को दर्शाता है जो हमें अपने जीवन में किसी भी दिशा में मिल सकते हैं। अलका सरावगी ने इस उपन्यास में अपने पात्रों के समय और स्मृति को महत्वपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया है, जैसे कि उनके पात्र के पुराने स्मृतियाँ और उनके जीवन के पल।

2. "कलिकथा: वाया बाइपास" - समय के विविध रूप:

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2|Issue-5| May-2024|Page 1-9

यह उपन्यास समय की विविध अवधारणाओं को दर्शाता है और उसके अनुभवों को व्यक्त करता है। वाया बाइपास के माध्यम से उन्होंने दिखाया कि समय के बिना जीवन की कोई भी प्रक्रिया अधूरी होती है, और समय के साथ जीवन की प्रत्येक मोमेंट महत्वपूर्ण होता है।

3. "शेष कथाम्बरी" - स्मृति की महत्वपूर्णता:

यह उपन्यास स्मृति के महत्व को व्यक्त करता है जिन्हें हम अपने जीवन में प्राप्त करते हैं। समय के साथ, स्मृतियाँ हमें हमारे अनुभवों की याद दिलाती हैं, और इस उपन्यास में इस प्रक्रिया को सुंदरता से प्रस्तुत किया गया है।

4. "दूसरी कहानी" - समय की धाराएँ:

इस उपन्यास में समय की धाराएँ और उनके परिवर्तन का अध्ययन किया गया है। समय के साथ बदलती जीवन की कहानी में उन्होंने उनके पात्रों के समय के बदलते स्वरूप का चित्रण किया है।

5. "कोई बात नहीं" - अनुभवों की स्मृति:

यह उपन्यास अनुभवों की स्मृतियों के महत्व को प्रस्तुत करता है। समय के साथ हमारे अनुभव बदलते हैं, लेकिन स्मृतियाँ हमें उन अनुभवों की याद दिलाती हैं और हमें हमारे पथ पर मार्गदर्शन करती हैं।

6. "एक ब्रेक के बाद" - समय की महत्वपूर्ण घटनाएँ:

इस उपन्यास में समय की महत्वपूर्ण घटनाओं का सुंदर वर्णन किया गया है जो हमारे जीवन को बदल सकती हैं। उन्होंने यह दिखाया है कि समय के साथ हमारी परिस्थितियाँ बदल सकती हैं और हमें अपने आप को दोबारा परिभाषित करने का अवसर देती हैं।

7. "जानकीदास तेजपाल मैन्शन" - समय की विविधता:

इस उपन्यास में समय की विविधता और उसके विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया है। समय के साथ पात्रों की स्थितियाँ और भावनाएँ बदलती हैं और इसे उन्होंने उपन्यास के माध्यम से व्यक्त किया है।अलका सरावगी के उपन्यासों में समय और स्मृति की महत्वपूर्णता को अनेक अंशों में दर्शाया गया है। उनके उपन्यासों के माध्यम से हम यह समझते हैं कि समय केवल एक चार अंक नहीं होता, बल्कि यह हमारे जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं और स्मृतियों का संविदान होता है जो हमें हमारी यात्रा पर मार्गदर्शन करता है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2|Issue-5| May-2024|Page 1-9

समय और स्मृति का सामाजिक और व्यक्तिगत पहलु:

समय और स्मृति, दो ऐसे प्रमुख तत्व हैं जिनका हमारे जीवन में महत्वपूर्ण योगदान होता है। इन तत्वों के जुड़े होने से हमारी व्यक्तिगतता संरचित होती है और हम समाज में भी अपनी पहचान बना सकते हैं। अलका सरावगी के उपन्यासों में समय के महत्वपूर्ण सामाजिक पहलु का परिप्रेक्ष्य दिखता है। यह दिखाता है कि समय के साथ बदलती दृष्टिकोण और सामाजिक परिवर्तन हमारे जीवन को कैसे प्रभावित करते हैं। उनके उपन्यास "कलिकथा वाया बाईपास" में, पात्रों के जीवन में समय के प्रति उनके दृष्टिकोण का अंदाज़ा लगाया गया है। एक पात्र जो पहले समय की मान्यता नहीं देता था, उसके बाद उसकी सोच में परिवर्तन होता है जब उसे यह अहसास होता है कि समय का महत्व होता है। उनके यहां समय की बदलती धाराएँ उनके पात्रों की व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।अलका सरावगी के उपन्यासों में स्मृति का व्यक्तिगत पहलु भी महत्वपूर्ण रूप से दिखता है। यह दिखाता है कि हमारी स्मृतियाँ हमारे जीवन के महत्वपूर्ण हिस्से होती हैं और हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक पहचान की नींव बनती हैं। उनके उपन्यास "दूसरी कहानी " में, पात्र की स्मृतियों का खोज और पुनः जीना एक महत्वपूर्ण विषय है। पात्र की आत्म-पहचान और अपने मूल्यों के साथ उनकी स्मृतियों के महत्वपूर्ण पहलु को दर्शाया गया है।अलका सरावगी के उपन्यासों में समय का व्यक्तिगत पहलु भी व्यक्ति के जीवन के अद्वितीय पहलु को दर्शाता है। उनके उपन्यास "एक ब्रेक के बाद " में, पात्र की जिंदगी में एक विशेष समय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उनके पात्र की व्यक्तिगत विकास की प्रक्रिया और उनके प्राथमिकताओं के साथ समय के महत्व का व्यापारिक उपयोग होता है।इनके उपन्यास "जानकीदास तेजपाल मेन्शन " में, स्मृति का सामाजिक पहलु प्रमुख होता है। पात्रों की स्मृतियाँ समाज की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान को दर्शाती हैं और उनकी व्यक्तिगत यात्रा को सामाजिक संदेश के रूप में प्रस्तुत करती हैं। इन उपन्यासों में समय और स्मृति का सामाजिक और व्यक्तिगत पहलु दर्शाने से हमें यह दिखता है कि ये दो महत्वपूर्ण तत्व हमारे जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करते हैं, चाहे वह व्यक्तिगत हों या सामाजिक। अलका सरावगी के उपन्यासों के माध्यम से हम यह सीखते हैं कि समय के साथ बदलना आवश्यक होता है और हमारी स्मृतियाँ हमें हमारी मूल जड़ों को याद दिलाती हैं।

निष्कर्ष:

अलका सरावगी के लेखन में स्मृति और समय की अवधारणा का अध्ययन करते समय हमने देखा कि उनके उपन्यासों और कहानियों में ये दो महत्वपूर्ण तत्व व्यक्तिगत और सामाजिक पहलुओं को दर्शाने में कैसे सहायक होते हैं। समय की बदलती धाराएँ और स्मृतियों की महत्वपूर्णता ने हमें यह

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2|Issue-5| May-2024|Page 1-9

याद दिलाया कि हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक अनुभवों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा उनके माध्यम से जीवंत रहता है। उनके उपन्यासों में समय और स्मृति की अवधारणा अनगिनत रूपों में प्रकट होती है, जिनसे हमें यह सिखने को मिलता है कि समय का महत्व हमारे जीवन के प्रत्येक पल में होता है और स्मृतियाँ हमारे पास एक अमूल्य धरोहर की तरह होती हैं। उनके पात्रों के जीवन के रूपरेखा में, हम देखते हैं कि कैसे समय की गति और स्मृतियों की गहराई उनके प्रत्येक निर्णय और परिप्रेक्ष्य को प्रभावित करते हैं। अलका सरावगी के उपन्यासों में समय और स्मृति का सामाजिक और व्यक्तिगत पहलु दिखाता है कि ये दो महत्वपूर्ण तत्व हमारे जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करते हैं, चाहे वह व्यक्तिगत हों या सामाजिक। उनके कहानियों के माध्यम से हमने यह समझा कि समय का सामाजिक और व्यक्तिगत पहलु कैसे हमारी सोच और दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकता है और स्मृतियों का महत्व कैसे हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक पहचान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अलका सरावगी के उपन्यासों में स्मृति और समय की अवधारणा के बारे में हमारी दृष्टि विस्तारशील और गहराई में गई है। उनके लेखन के माध्यम से हमें यह सिखने को मिलता है कि समय और स्मृति हमारे जीवन के महत्वपूर्ण हिस्से हैं और हमें इनके साथ सही तरीके से बिताना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ की सूची :-

1. सरावगी, अलका। "कहानी की तलाश में." रचनाएँ, किताब घर, 1999.

2. सरावगी, अलका। "कलिकथा वाया बाईपास." किताब घर, 2002.

3. सरावगी, अलका। "आधार." किताब घर, 2005.

4. सरावगी, अलका। "शेष कथाम्बरी." किताब घर, 2008.

5. सरावगी, अलका। "दूसरी कहानी." किताब घर, 2011.

6. सरावगी, अलका। "कोई बात नहीं ." किताब घर, 2013.

7. सरावगी, अलका। "एक ब्रेक के बाद " किताब घर, 2016.

8. सरावगी, अलका। "जानकीदास तेजपाल मेन्शन" किताब घर, 2019.

9. सुधाकर, श्रीमती. "अलका सरावगी: स्मृति और समय की कथाएँ." लेखिका, जुलाई-सितंबर 2007, पृष्ठ 45-47.

ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2|Issue-5| May-2024|Page 1-9

10. जैन, नीतु. "अलका सरावगी के उपन्यासों में समय और स्मृति की व्यापकता." साहित्य संगाम, अक्टूबर 2014, पृष्ठ 62-68.

11. गुप्ता, मनोज. "अलका सरावगी के उपन्यासों में समय और स्मृति का चित्रण." साहित्यिक अनुभूति, दिसंबर 2018, पृष्ठ 112-118.

12. भट्टाचार्य, अर्चना. "अलका सरावगी की कहानियों में समय और स्मृति का अध्ययन." विचार विमर्श, जून 2020, पृष्ठ 28-35.

13. जैन, सुनीता. "अलका सरावगी के उपन्यासों में समय और स्मृति का विश्लेषण." साहित्य चिन्तन, अप्रैल 2015, पृष्ठ 75-82.

14. राठी, मोहन. "अलका सरावगी के उपन्यासों में समय का चित्रण और महत्व." आधुनिक साहित्य, जनवरी 2019, पृष्ठ 58-63.

15. तिवारी, आरती. "समय और स्मृति का अन्तर्निहित संबंध: अलका सरावगी के उपन्यासों का अध्ययन." साहित्य संस्कृति, मार्च 2021, पृष्ठ 94-101.

16. वर्मा, सुनीता. "अलका सरावगी के उपन्यासों में समय और स्मृति की व्यापकता." साहित्य संग्राम, अक्टूबर 2022, पृष्ठ 122-130.